Ἀφροδείσιος πραγματευ
τῆς Οὐλπίου Ἀππιανοῦ
κατεσκεύασα αὐτῷ καὶ
τῷ πάτρωνί μου Μην . . .
καὶ τῇ συμβίῳ μοῦ Εἶα
ἔτη δι' καὶ τοῖς τέκν-
οις μοῦ καὶ τῇ ἐν-
πίστα μοὶ φιλητῇ.
Εἴ τις δὲ ἕτερος τολ-
μήσει ἀνῦξε οὐκ εξ-
ὸν ἔσει· εἴτις δὲ τολμή-
σ(ε)ι, δώσ(ει) τῷ ἱερωτάτῳ τα
μίῳ Ἀττικὰ(ς) πεντακι
σχιλίας· καὶ τῇ πόλι
ἅμα τυσαῦτα.

Сборникъ IV стр. 141; A. E. M. XIV (1891) стр. 154. № 37
Преписъ има и въ „Силогосъ", читалище въ гр. Родосто.

№ 160; фиг 93. (гл. фиг. 93 на стр. 73).

Въ нартиката на църквата „Св. Богородица" въ Малко Търново. Мрам. камъкъ 0·44 м. шир. и 0·68 м. вис., отъ горе съ корнизъ, работенъ еднообразно отъ четиритѣ страни, отъ горе очуканъ

Ἀγαθῆι τύχηι
Ἀπόλλωνι Αὐλαριο-
κῶ Θεῶ ἐπηκόῳ
Στράτων Στράτων[ος
ἄρξας τῶν ἐν τοῖς σιδ[η-
ρείοις Ἑλλήνων τῶν
ἐπι τῆς Ἀντωνείνου βα-
σιλείας ὑπὲρ τῆς ἑαυτοῦ
καὶ τῶν ἰδίων καὶ τῶν
ἐργαστῶν σωτηρίας
καὶ εὐεργεσίας εὐξάμε-
νος τὸν βωμὸν
ἀνέθηκα

Сборникъ IV стр. 141; A. E. M. XIV стр. 153 № 36